प्लास्टिक एवं गाजरघास मुक्त ग्राम

डॉ.अजय चौरसिया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल उत्पादन), दीनदयाल शोध संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां,सतना(म.प्र.)

प्लास्टिक एवं गाजर घास मनुष्य और पशुओं के लिए भी गंभीर समस्या है। प्रतिदिन निकलने वाले कचरा में लगभग 15 से 20 तक पॉलीथिन अथवा प्लास्टिक रहता है। धड़ल्ले से उपयोग किए जाने वाला प्लास्टिक की वास्तविकता यह है कि यह पृथ्वी की जान ही निकाल रहा है। ऐसे में यदि समय रहते लोग सचेत नहीं हुए तो उपजाऊ जमीन बंजर हो जाएगी। इसी प्रकार गाजरघास से खाद्यान्न फसल की पैदावार में लगभग 4 प्रतिशत तक की कमी आंकी गई है। इस खरपतवार के लगातार संपर्क में आने से मनुष्यों में डरमेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा आदि की बीमारियां हो जाती हैं। दुधारू पशु अगर सेवन करते है तो दूध में कड़वाहट एवं अधिक मात्रा में सेवन से पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

गाँव को प्लास्टिक मुक्त इस प्रकार से किया जा सकता है :

- खरीदी के लिए बाज़ार में खुद का बैग लेकर जाएं। दुकानदार/सब्जी विक्रेताओं को भी पॉलिथीन बैग प्रयोग न करने की सलाह देना चाहिए।
- खाने-पीने की वस्तुएं आपूर्ति करने वालों पर प्लास्टिक रहित पैकेजिंग का उपयोग करने का दबाव बनाएं।
- प्लास्टिक से बनी प्लेटों, ग्लास, चम्मचों आदि का इस्तेमाल करने से मना करें. इनके स्थान पर दोना-पत्तल और मिट्टी के बर्तनों के प्रयोग करें।
- बाग़-बगीचों, मंदिरों, सार्वजनिक स्थलों एवं नदी किनारे पर टहलते हुए अगर आपको प्लास्टिक सामग्री दिखे तो उसे उठाकर डस्टबिन में डालना चाहिए।

गाँव को गाजर घास को इस प्रकार से मुक्त किया जा सकता है:

- वर्षा ऋतु में गाजर घास को फूल आने से पहले जड़ से उखाड़कर कम्पोस्ट एवं वर्मीकम्पोस्ट बनाना चाहिए।
- घर के आस-पास एवं संरक्षित क्षेत्रों में गेंदे के पौधे लगाकर गाजर घास के फैलाव वृद्धि को रोका जा सकता है।
- अक्टूबर-नवम्बर में अकृषित क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक पौधे जैसे चकौड़ा (कैसिया सिरेसिया या कैसिया तोरा) के बीज एकत्रित कर उन्हें फरवरी-मार्च में छिड़क देना चाहिये। यह वनस्पतियां गाजर घास की वृद्धि एवं विकास को रोकती हैं।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में शीघ्र बढ़ने वाली फसलें जैसे ढैंचा, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि की फसलें लेनी चाहिए।
- अकृषित क्षेत्रों में शाकनाशी रसायन जैसे ग्लायफोसेट 1.0-1.5 प्रतिशत या मेट्रीव्यूजिन 0.3-0.5 प्रतिशत घोल का फूल आने के पहले छिड़काव करने से गाजर घास नष्ट हो जाती है।
- ग्रीष्म एवं शरद ऋतु में अकृषित क्षेत्रों में अंकुरित होने पर कुछ बढ़वार करने के बाद पानी न मिलने के कारण इनका विकास नहीं हो पाता है पर वर्षा होने पर यही पौधे शीघ्र बढ़कर बीजों का उत्पादन कर देते हैं। अतः ऐसे समय इन्हें शाकनाशियों द्वारा नष्ट करना चाहिये।
- फसलों में गाजरघास को रसायनिक विधि द्वारा नियंत्रित करने के लिये खरपतवार वैज्ञानिक की सलाह अवश्य लें।
- मेक्सिकन बीटल (जाइग्रोग्रामा बाइकोलोराटा) नामक कीट को वर्षा ऋतु में गाजरघास पर छोड़ना चाहिए।
- जगह-जगह संगोष्ठियां कर लोगों को गाजरघास के दुष्प्रभाव एवं नियंत्रण के बारे में जानकारी देकर उन्हें जागरूक करें।

मुद्रक: नवीन, मझगवाँ